DOI: 10.51220/hjssh.v8i1.5

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 8 pp.45 -47, December, 2013, ISSN. 0975 - 9891

पर्यावरण के सन्दर्भ में अथर्ववेदीय भूमिसूक्त (पृथ्वी सूक्त) की प्रासंगिकता

कुसुम डोबरियाल
संस्कृत विभाग
हे0न0ब0ग0वि0वि0 परिसर पौड़ी गढ़वाल-246001, उत्तराखण्ड

Received: 11-07-2013 **Revised: 05-09-2013** **Accepted: 19-09-2013**

ABSTRACT

वैदिक साहित्य का अध्ययन व विश्लेषण करने से ज्ञात होता है कि प्राचीन समय से ही पर्यावरण शिक्षा के प्रति जनमानस को जागरूक करने का प्रयास साहित्य के माध्यम से निरन्तर किया गया है, क्योंकि मानव जीवन के अस्तित्व का उसके पर्यावरण जीवन से सीधा सम्बन्ध रहा है। इसी क्रम में प्रस्तुत शोध पत्र में अथर्ववेदीय भूमिसूक्त में वर्णित पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं मानव के अस्तित्व की जननी ''पृथ्वी'' से सीधा सम्बन्ध प्रतिस्थापित करने का शोधपरक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

Key words : अथर्ववेद, भूमि सूक्त, पर्यावरण

वेदों के गहन अनुशीलन से ज्ञात होता है कि वेद समस्त ज्ञान-विज्ञान के श्रोत हैं। 'वेद सर्व प्रतिष्ठितम्'-यह वाक्य वेद की विकसितता व प्रतिष्ठितता को द्योतित करता है। ज्ञानार्थ 'विद्' धातु से निष्पन्न वेद भारत में हीं नहीं अपितु विश्व के समस्त मनीषियों के लिए ज्ञान सेतु एवं अनन्त ज्ञान राशि के अक्षय भंडार हैं जैसे कि कहा गया है-'वेदात् सर्व प्रसिद्धपति' अर्थात वेद से ही सब कुछ विकसित हुआ है। वह ज्ञान-विज्ञान चाहे ज्योतिष, यज्ञ, मनोविज्ञान, सृष्टि, जीव, रसायन, गणित, वनस्पति, आयुर्वेद, वास्तु इत्यादि से सम्बद्ध हो अथवा कृषि से सम्बद्ध हो-इन सभी का मूलाधार वेद है। प्राकृतिक व सामाजिक पर्यावरण को समुन्नत व सुस्थिर रखने के लिए वेदों में अनेकशः बहुमूल्य निर्देश भरे पड़े हैं, जिनमें 'पृथ्वीसूक्त' का विशेष महत्व है।

पर्यावरण सम्बन्धी समस्या आज सम्पूर्ण विश्व के लिए एक भयानक रूप धारण कर चुकी है। परि+आवरण अर्थात चारों तरु से आच्छादित पृथ्वी पर विद्यमान समस्त जड़ व चेतन जगत्। पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, वृक्ष, वनस्पति, वन्यप्राणी आदि पर्यावरण के घटक तत्व कहलाते हैं। वैदिक ऋषियों के द्वारा इन प्राकृतिक तत्वों को अपने जीवन का संरक्षक जानकर उनकी उपासना करना, पर्यावरण संरक्षण का ही परिचायक है।

अथर्ववेद के 12वें काण्ड का प्रथम सूक्त (सत्य वृहत ऋतम् उग्रम् दीक्षा तपः ब्रह्म यज्ञः पृथ्वीं धारयन्ति सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्नी उरूं लोकं पृथ्वीं नः कृणोतुद्ध 'पृथ्वी सूक्त' के नाम से प्रसिद्ध है।[1] यास्क ने 'पृथ्नात्पृथ्वीत्याहुः' इस प्रकार व्यापक, फैली होने के कारण 'पृथ्वी' शब्द की व्युत्पत्ति की। (निरूक्त1/4/2), भूमिसूक्त में वर्णित है कि कृषक ऊंची-नीची भूमि को समतल बनाने के लिए पृथ्वी पर हल चलाते समय

©SHARAD

सोचता है कि पृथ्वी के मर्मस्थल पर कोई चोट या क्षति न हो।[2] (यत ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्)

आज पर्यावरण दूषित हो जाने के कारण पृथ्वी पर विद्यमान हमारा जल, वायु, वनस्पति, अग्नि, खाद्य पदार्थ आदि समस्त जीवनोपयोगी तत्वों के कारण मानव जगत के अस्तित्व को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया है। अतः हम सभी का यह कर्तव्य है कि अन्न देने वाली, सुगन्धयुक्त, जलों वाली भोग्य पदार्थ एवं ऐश्वर्य प्रदान करने वाली पृथ्वी का संरक्षण करें। एक मंत्र में 'माता भूमिः पुत्रेहं पृथिव्याः' यह वैदिक वाक्य पृथ्वी को साक्षात् मूर्तिमान मातृत्व रूप प्रदान कर, उससे सभी प्रकार के कल्याण करने की कामना करता है।[3] (भूमे मातिर्निधोहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठित्)। पृथ्वीसूक्त में यह सुस्पष्ट है कि पृथ्वी कहीं धूलरूप है, कहीं शिलारूप है तो कहीं पत्थर है।[4] (शिला भूमिरष्मा पांसुः सा भूमिः संधृताधृता)। इस पर कहीं बर्फ से ढके पर्वत, कहीं जंगल, कहीं वनस्पतियां, पेड़, लताएं सब स्थिर रूप में विद्यमान हैं। रत्नगर्भा वसुन्धरा सभी की स्तुत्य है। इसलिये सबकी कामनाओं को पूर्ण करने वाली मातृदेवी स्वरूपा पृथ्वी का संरक्षण करना सभी का परम कर्तव्य है। इसी के संरक्षण के लिए 'पृथ्वी दिवस' मनाया जाता है। यदि धरती को बचाना है तो वायुमंडल में पहुंच रही कार्बनडाइआक्साइड की मात्रा को वर्ष 2050 तक आधा करना होगा।

आज मनुष्य अधिक धन कमाने के लालच में मिट्टी की शक्ति का जरूरत से अधिक लाभ उठाने के लिए कृत्रिम खादों एवं कीटनाशक औषधियों का प्रयोग कर उत्पादन को बढ़ाने के प्रयास में सम्पूर्ण मानव समाज के अस्तित्व को खतरे में डाल रहा है। वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई से भी पर्यावरण पर बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है। सम्पूर्ण जगत को आश्रय प्रदान करने वाली पृथ्वी से किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ न करने का अथर्ववेद के 'पृथ्वीसूक्त' द्वारा पृथ्वी के संरक्षण पर बल व स्पष्ट निर्देश दिया गया है। आज कृषि में कृषकों द्वारा रासायनिक खादों के प्रयोग से खाद्य पदार्थों में स्वाभाविक सुगन्धि व रस नष्ट हो गया है। भूमिसूक्त में ऋषि मातृभूमि से प्रार्थना करता है कि-हे मातृभूमि! जो तुम्हारे में उत्तम सुगन्धि है, वह वनस्पतियों में प्रकट होती है और सूर्य उस सुगन्धि को अपनी किरणों से उद्दीप्त करते हैं। वैज्ञानिकता लिए यह सूक्त समातृभूमि से मधुर रस की कामना करते हुए पृथ्वी को हरा-भरा व समृद्धि युक्त रखने का संकल्प लिये हुए है।[5]

यस्से गन्धः पृथिवि संवभूव यं विभ्रत्येषधयो यमापः।
यं गन्धर्वा अप्सरसश्च भेजिरे तेनमा सुरभिं कृणु।।

वातावरण की शुद्धि के समाधान के लिए वैदिक सूक्तों द्वारा यज्ञ विधान या अग्निहोत्र का उल्लेख अनेक स्थानों पर दृष्टिगोचर होता है। ऋषियों द्वारा वायुमण्डल को शुद्ध व सुगन्धित रखने के लिए मातृभूमि से प्रार्थना की गई है, जिसका उल्लेख 'भूमिसूक्त' में स्पष्ट है। यज्ञ द्वारा उत्तम वृष्टि होने के कारण पर्याप्त मात्रा में अन्न की उत्पत्ति होती है, यह उल्लिखित है।[6]

भूम्यां देवेभ्यो ददति यज्ञं हव्यमरंकृतम्।
भूम्यां मनुष्या जीवन्ति स्वधयान्नेन मर्त्याः।।

पर्यावरण प्रदूषण को नियमित नियन्त्रित करने के लिए वेदों में यज्ञ का वैज्ञानिक लाभ बताते हुए कहा गया है कि यज्ञ से प्राणवायु की उत्तम शुद्धि अर्थात पर्यावरण की शुद्धि होती है। यज्ञ को स्वास्थ्यवर्धक,

रोगनाशक व वायुशोधक (प्रदूषण नियंत्रक) के रूप में निरूपित किया है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार-'यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म।' आज वायुमण्डल के प्रदूषित होने के कारण ऋतुचक्र का संतुलन बिगड़ गया है। यही कारण है कि आज कहीं सूखा है तो कहीं अत्यधिक वर्षा, कहीं भीषण बाढ़ का प्रकोप तो कहीं ग्लेशियरों का पिघलना। भूमिसूक्त में ऋतुओं के अनुकूल पृथ्वी पर उत्पन्न होने वाले पदार्थों की उपलब्धि व आनन्ददायिनी रात-दिन का उल्लेख पर्यावरण के प्रति उन्नत जागरूकता की ओर संकेत करता है।[7] ग्रीष्मस्ते भूमे वर्षाणि शरद्धेमन्तः शिशिरो बसन्तः। ऋतवस्ते विहिता हायनीरहो रात्रे पृथिवि नो दुह्यताम्।। यह चक्र अनन्त काल से चलता आ रहा है, किन्तु विगत दो सौ वर्षों से औद्योगीकरण के फलस्वरूप ऋतु चक्र में बदलाव आने से जलवायु परिवर्तन हुआ है। जलवायु परिवर्तन ऐसे परिवर्तन का सूचक है जिसका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध मानव की उन गतिविधियों से है जो वैश्विक वायुमण्डल के संघटन को बदलने में सक्षम है। आज चारों ओर वैश्विक तापन की चर्चा है। नगरीकरण तथा औद्योगीकरण के दौरान कार्बनडाइआक्साइड, कार्बनमोनोक्साइड, नाइट्रस आक्साइड जैसे गैसों के उत्सर्जित होकर वायुमण्डल मे मिल जाने से पृथ्वी का ताप बढ़ा है। वैश्विक ताप से ग्लेशियरों का पिघलना, समुद्र से जलस्तर में वृद्धि होगी जिसे तटवर्ती इलाके जलमग्न हो जायेंगे और कृषि प्रभावित होगी। इतना ही नहीं, मलेरिया, डेंगू जैसे रोगों की वृद्धि होगी। ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए साझे प्रयासों की सख्त जरूरत है। यदि पृथ्वी को बचाना है तो वायुमण्डल में पहुंच रही कार्बनडाइआक्साइड की मात्रा को नियंत्रित करना होगा तथा जीवाश्म ईंधन का प्रयोग बन्द करके गैर-पारम्परिक उर्जा साधनों का दोहन करना होगा और बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण करना होगा।

पृथ्वी पर सुख समृद्धि का साम्राज्य हो। यह संदेश प्राचीन ऋषि एवं मनीषियों द्वारा वैदिक ऋचाओं में सर्वत्र उल्लिखित है। प्राकृतिक पर्यावरण के साथ ही सामाजिक पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए प्रस्तुत 'भूमिसूक्त' की विशेष प्रासंगिकता है। पृथ्वी पर निवास करने वाले सभी मनुष्यों का यह कर्तव्य बनता है कि यदि हम पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त कराना चाहते हैं तो हमें स्वयं से कार्य प्रारम्भ करके जनसाधारण में मातृभूमि के संरक्षण के लिए कटिबद्ध होकर ऐसे सभी कार्य जो मन, वचन व कर्म से पृथ्वी के प्रति समर्पित हों, किये जाने चाहिए। अंत में मैं प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से यही कहना चाहूंगी कि हम सब मिलकर शपथ लें कि आज से पर्यावरण की रक्षा करेंगे और पृथ्वी को बचाने में हर संभव प्रयास करेंगे।

सन्दर्भ-

1. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/1
2. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/35
3. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/10
4. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/26
5. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/23
6. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/22
7. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/36
8. अथर्ववेद-पृथ्वीसूक्त-12/1/31